National Conference on Sustainable Developments in Engineering, Science, Humanities and Management (NCSDESHM – 2025)
28th December, 2025, Raipur, Chhattisgarh, India.

CERTIFICATE NO: NCSDESHM /2025/ C1225906

समाज-व्यवस्था हेतु दलित विमर्श की संवेदना का अध्ययन

Soumya S

Research Scholar, Ph.D. in Hindi, P.K. University, Shivpuri, M.P., India.

सारांश

समाज-व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में दलित विमर्श की संवेदना का अध्ययन करते समय मुंशी प्रेमचंद का साहित्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो उठता है। यद्यपि प्रेमचंद स्वयं दलित साहित्य आंदोलन के प्रत्यक्ष प्रतिनिधि नहीं थे, फिर भी उनके उपन्यासों और कहानियों में दलित जीवन की पीड़ा, शोषण और सामाजिक विषमता का सशक्त चित्रण मिलता है। उन्होंने जाति-आधारित अन्याय और सामाजिक असमानता को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया। 'सद्गति' में दुखी चमार की त्रासदी के माध्यम से ब्राह्मणवादी व्यवस्था की अमानवीयता को उजागर किया गया है। 'ठाकुर का कुआँ' में पानी जैसे मूल अधिकार से वंचित दलित स्त्री की विवशता सामाजिक भेदभाव की गहरी जड़ों को दर्शाती है। 'गोदान' में भी निम्नवर्गीय जीवन और शोषण की व्यापक तस्वीर उभरती है। प्रेमचंद की संवेदना करुणा और मानवीय दृष्टि पर आधारित है। उन्होंने दलित पात्रों को दया के पात्र मात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया। यद्यपि उनके लेखन में प्रत्यक्ष विद्रोही स्वर अपेक्षाकृत कम है, फिर भी उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित किया। इस प्रकार प्रेमचंद का साहित्य दलित विमर्श की प्रारंभिक संवेदनात्मक भूमि तैयार करता है, जो आगे चलकर आत्मसम्मान और प्रतिरोध की सशक्त धारा में विकसित हुई।